सौरभ

सुन्दर साहित्य-माला

सम्पादक

रामलोचनशरण बिहारी

सौरभ

(ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली की कतिपय कमनीय कविताओं का संग्रह)

लेखक

कादम्बरी-सम्पादक

प्रोफ़ेसर श्रीरामाज्ञाद्विवेदी "समीर,"

एम.ए. (ऑनर्ज़), एम.आर.ए.एस.

प्रकाशक

हिन्दी-पुस्तक-भण्डार,

लहेरिया-सराय, दरभङ्गा (बिहार)

प्रथम बार १००० | १९८४ | मूल्य १)

निवेदन

ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली की ये कविताएँ माधुरी, कादम्बरी, मनोरमा, स्त्री-दर्पण, स्वदेश, उपन्यास-लहरी, युगप्रवेश, कर्त्तव्य, मौजी, मतवाला तथा महारथी आदि पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होती रही हैं। और थोड़ी सी ऐसी भी हैं जो पहले-पहल ही छपी हैं।

ब्रजभाषा की कविताएँ जान-बूझ कर पहले रखी गई हैं और यों भी संख्या में अधिक हैं। खड़ी बोली के छन्द तो छायावाद की तरङ्ग में लिखे गये हैं, पर एकाध ब्रजभाषा की कविताओं में भी नये भावों को समाविष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। एक और बात शायद कुछ पुराने लोगों को खटके—कवित्त आदि प्रचलित छन्दों में मैंने चार पंक्तियों के स्थान में पाँच-पाँच, छः-छः तक लिख डाला है। मेरा तो विश्वास है कि जहाँ ही भाव समाप्त हो और काव्य की धारा रुक जाय वहीं कविताएँ पूर्ण कर देना चाहिए। कारण, कविता तो हृदय का स्वाभाविक प्रस्फुटन है, कपड़े अथवा जूते की काट-छाँट नहीं।

श्री अयोध्याधाम,
वैशाख शुक्ल, १९८४ वि०

—श्रीरामाज्ञाद्विवेदी "समीर"

सूचीपत्र

(१) पराग

संख्या पृष्ठ

संख्या पृष्ठ

(२) पँखुरियाँ

संख्या पृष्ठ

---

(१)

पराग

— १ —

कृष्ण के प्रति

मन मनि अँधियारो परो, मोह पाहरू कीन।
चतुर चोर मोहन तऊ, चोरी अजहुँ कली न ॥
मों कारो मन तैं लियो, रिन निज कारो गात।
कुरुक करावत स्याम हौं, करज न अजौं चुकात ॥

ध्याइबो

गाइन गोहन गावत ग्वाल के
बालन पै बलि जाइबो जाइबो ।
जाइबो वै जमुना के मझारन
डारन बैठि कै बात बनाइबो ।
नाइबो रङ्ग को गोपी गुपाल को
गाल पै लाल गुलाल लगाइबो ।
गाइबो गीत गुबर्धन को औ
गुबर्धनधारी मुरारी को ध्याइबो ॥

कल्पना

कोकिला रसाल बन सिसिर न होत जहाँ,
कबिता कुमोदिनी की चन्द्रिका किधौं छई ।
कैधों काव्य-मंडप मों दीपसिखा जगमगी,
राग अनहत की प्रतिध्वनि सुनी गई ।
बसत बसन्त जिन कुंजनि की मधुमाखी,
योग की कै जोगिनि ही बियोगिन है भई ।
स्वसा सुख स्वप्न की रसिकता सरिता की मीन,
चञ्चल चित्त चकवा की चारु चकई ॥

शंकर-पलायन

स्मर सों समर करि हारि महादेव मानों,
कामिनी की काया माहिं भागि कै लुकायो है।
पकरि न पावै याते कुचन द्वै रूप ह्वै कै,
चन्दन के भेस भूरि भसम रमायो है ।
चन्द नखछत बन्यो त्रिबली त्रिसूल त्यौंही,
नागन की माल काल अलक बनायो है ।
गंगा को बटोरि कै त्रिवेनी कीन्हीं नैननि मों,
सरन अनंग की ही साँचौ सिव आयो है॥

आशीर्वाद

माँग भरो सेंदुर सुहाग भरो दिन रैन,
नैन भरो काजर कपोल भरी मुसकान ।
नेह भरो चित्त अरु गेह भरो वित्त बहु,
देह भरो भूषन न दूषन रहै अजान ।
भाल भरी भाग अरु ओंठन ललाई भरी,
हाथन भलाई औ कलाई भरी अलकान ।
लालना भरोई रहै पालना तिहारो आली,
बैन मधुराई भरो ऐन चैन खान पान ।
मोहनी मयङ्क मुख भरी लङ्क बाँह रहै,
अङ्क भरो बालम कबौं न नैकु बिछुड़ान ॥

कृष्णाभिसारिका

कारी अँधियारी राति जाति अभिसार प्यारी,
सकल सिंगार साजि सजनी सुहाति है।
कैधों संगमूसा के महल मों धरो है हीरो,
भौन मों बिभावरी के कैधों दीप-बाति है।
कारे कारे बादरन बीच बिज्जुरी की प्रभा,
कानन मों कोल कामिनी के मोती पाँति है।
कैधों घन कानन मों फनी को दमक्के मनि,
अमा की निसा मों कैधों चन्द्रकला जाति है॥

गुरु नानकदेव का आगमन

हाल हिन्दुआने को बेहाल बनि जातो बस,
माल मूसि मूसि मुसलिम जन खावतो ।
लूटि जाती लाज अरु टूटि जाती टाँग, माँग
भारत की भूमि भाल और को भरावतो ।
फूटि जातो करम धरम धन छूटि जातो,
मरम न परम पुनीत बतरावतो ।
लागतो न बानक बहादुरी को बीरन की,
देस भर भरम भयानक मों छावतो ।
सिक्खन जगातो दुरभिक्खन भगातो कौन,
जौ न गुरु नानक अचानक मों आवतो ॥

गुरु नानक दिवस,
सं० १९८३

मैं

उदधि उलचि डारौं मारौं हेरि मीच हू को,
जकरि कै जमराज हू को बाँधि लाऊँ मैं।
फारहुँ फनीस फन फोरहुँ पहार पुञ्ज,
नागफाँस फाँसि दिगनाग दाबि लाऊँ मैं।
अबहिं अकास उड़ि गाड़हुँ पताका पुन्य
आपके प्रताप की, न कछु बार लाऊँ मैं।
बादर बिदारौं इन्द्र हू को ऐंठि डारौं अजौं,
रावरी रजायसु तनिक जो पै पाऊँ मैं॥

आगि लगावहुँ जलधि मों, है अगिया बैताल।
नरक सरग दोउ एक कै, जाहुँ पैठि पाताल॥

["सोने की गाड़ी" से]

—❖◇❖—

बैरी वर्षा

ग्रीषम की भीषम जरनि जारि डार्‌यो पुनि,
पौन पुरवाई ह्वै दुताई द्रुत कीनी है।
कुटिल कलापी ने अलापी है बिगुल बोली,
टोली २ फैलि कै खबर खूब भीनी है।
हय गज ऊँट बायुयान प्यादे छिन छिन,
बनैं ब्योम माँहिं इन्द्रधनु धारि लीनी है।
बूँदन को छर्रों छूटै ओलन को गोलो चलै,
बर्छी बिज्जुरी सों मारि मार भल कीनी है।
गर्जि गर्जि तर्जि तर्जि घहरात दिनरात,
फहराय फरर पताका निज दीनी है।
बादर बितान तानि पावस जहान जीति,
बापुरे बियोगी पै चढ़ाई बोलि दीनी है॥

१—३—२५]

श्रीकृष्ण-स्वागत

(जन्माष्टमी के लिए लिखित)

कन्हैया प्यारे ! स्वागत आज तुम्हारो !
मातु देवकी क्रन्दन करती करि २ घोर चिकारो ॥१॥
बिखरे केस-कलाप भरे दृग, झेलति दुःख अपारो ।
आवहु आसु अंक भरि खेलहु, जेल ते मातु निकारो ॥२॥
कंस-वंस बिध्वंस तुरत करि, खल दल कहँ दलि डारो ।
दारिद-दानव देस देत दुःख, धरि दरि ताहि पछारो ॥३॥
धन मन हरिगो सरिगो नौका, है न डाँड़ पतवारो ।
बनि बनवारी बजावहु बंसी, नाव लगावहु पारो ॥४॥
झिमिझिमि मेंह बरीसत, गरजत घन, छायो अँधियारो ।
निज ससि मुख कर देहु उँजारो, करि गहि हमहिं उबारो ।
है उपहास दास दुःख सों तव, तुमहीं बनत लबारो ॥६॥
आवन कहिगो बचन हू देगो, आवहु, आवन बारो ।
होत बिलम्ब और अवलम्ब न, हम कहँ काह बिसारो ॥७॥
कन्हैया प्यारे० ॥

२७ अगस्त,
१९२१

—"कर्तव्य"

बदला

होली के दिवस कान्ह पकरि अकेलो गयो,
बस न कछूक चल्यो वसन बटोरि बोरि
दीन्हीं सबै रंग, कहैं, "वसन चुरैहो फेरि,
रारहू मचैहो फेरि रोकि मग खोरि खोरि।
माखन चुरायो भल दधि खायो द्वार खोलि,
मुख मटकायो लला मटकीन फोरि फोरि"।
पकरि पहूँचो पुनि हूँचो दै मरोरैं मुख,
"एही मुख खायो खूब छीको छैल तोरि तोरि"॥

चुक्कड़-चतुष्क

रहिबो भलो कुँवारि बरु, जो न पीय अनुकूल ।
निज अनुरूप न पाय पी, होत दुसह ही सूल ॥१॥

पिया है पियक्कड़ री सखी कहा कहौं तोसों,
अक्कड़ कै चलत सड़कन पै मद मों ।
चुक्कड़ तो चूकै नाहिं पीपन के पीपा पी पी,
परत पनारन घुड़क्कै पीसि रद मों ।
पतित ह्वै नारिन मों कीच बीच नीच बनै,
उठै ना उठाये चलि सकै नाहिं कदमों ।
ऊपर तैं कक्कड़ चढ़ावै पीव फक्कड़ हा !
लक्कड़ जराय मरौं कैधों नदी नद मों ॥२॥

केती केती बिलम लौं चिलम करेजो जारै,
देखिकै अचंभो होय लोह को करेजो है ।
अर्सन लौं चर्सन के दमसों न मारै दम,
दामहू न घर माँहिं कीन्हों केत कर्जो है ।
भङ्ग रङ्ग माति कै अनङ्ग रिपु मात करै,
अङ्ग भङ्ग भयो तौहू मोहीं कहँ तर्जो है ।
खात अहिफेन हू सुखेन औ सुनै न काहू,
नेकहू न मानै गो अनेक वार बर्जो है ॥३॥

ऐसो है मम पीव, सखी सीख अब देहु मोहिं ।
तजहुँ पीव कै जीव, दूनहुँ राखत नहिं बनै ॥४॥

[उपन्यास-लहरी, नवम्बर १९२२]

रंग में

झिलमिली रेसम की आँगी दुति झलकति,
आली को जु स्याम बिंदु उरज उतंग में।
कैधों पंचबान बान को निसान सिव सीस,
गोली लागि गई काहू बीर को कै जंग में।
कैधों कयलासपति कंठ विष बिंदु बस्यो,
स्यामता है कैधों मध्य मैन के मृदङ्ग में।
कञ्चन को चक्रवाक नीलम जड़ाये भाल,
चंद्रभाल नीलम चढ़ाये भक्त भंग में।
भौंर भूलि बैठो कैधों श्रीफल सुकञ्ज जानि,
बटुरी है व्योम नीलिमा कै जोन्ह अंग में।
कैधों है लजाय कै मयङ्क मुख कारो करि
बैठो जाय ओट लखि कालिमा के रंग में॥

होली

फागुन फाग मच्यो चहुँघा ब्रजबाल सबै उठि धाईं उमङ्ग में।
खेलति रङ्ग गलीन गली चलीं आली अलापति यों इक सङ्ग में॥
कान्ह अकेले मिले मग मों, सखियान हँसीं औ लसीं अँग अङ्ग में।
"लैहों लला बदला सब सङ्ग" सबै कहि बोरैं गुबिंद को रङ्ग में॥

जाड़ा

दसन दबोटे ओटे आनन छिपाय लोटे,
क्योंहूँ न सिराति राति सीत भीत माला को ।
पाला सम लागत दुसाला औ दुलाई छींट,
भाला सम लागत 'समीर' सीत काला को* ।
अङ्गराग रङ्गराग पुहुप फुलेल फाग,
जतन अनेक जाके सीय के मसाला को ।
भरी सुरा प्याला परी पलँग सुबाला जाके
ता को ख्याल दुखिया बियोगी के कसाला को ?

* ये दो पंक्तियाँ मेरे गुरु स्वर्गीय पं० महेशप्रसाद 'महेश' जी की लिखी हैं । पूरा छन्द प्राप्त न होने से उसकी पूर्ति मैंने कर दी है ।

'समीर'

दोहावली

काह कहूँ ऐसी सखी, फुटमति कहूँ लखी न ।
लड़े सयाने नयन ये, हीय हिताई कीन ॥

तन ग्रीषम वर्षा नयन, बारिज बदन हिमन्त ।
सरद गंड भूषन सिसिर, पग पग बसत बसन्त* ॥

छन रुमाल छन चादरो, चूमति चैन परै न ।
छटपटाति तिय पिय बिरह, रहि न जात दिन रैन ॥

सजति सींक सुरमो सुरम, पुनि पुनि सखिन सयानि ।
पै न छुअति अँगुरिन डरति, पैन नैन गुन जानि ॥

तरुनी तन सुरतरु फरत, नित फल अजब अनेक ।
कंज बिम्ब दाड़िम स्रिफल, कौहर लौं इक एक ॥

हंस पंक्ति रद बारि मद, बरसत झर झर अङ्ग ।
ह्वै ताड़ित अंकुस तड़ित, घन गज गरज अनङ्ग ॥

सिंदुर सुरमो सारि चख, भूषन अँगिया अङ्ग ।
परी परी सी पलँग पर, इन्द्रधनुष के रङ्ग ॥

परी मसहरी दुति हरी, तिय मुख ताहिं लखाय ।
चुयो चन्द छबि भार लै, सरद गगन गरुआय ॥

मिलि मसि अँगुरिन अरुनई, काजर देत सुहाय ।
चंचल चख खंजननि जनु, गुंजा रही चुनाय ॥

---

* वियोग में नायिका के भिन्न २ अंगों में छहों ऋतुओं का एक साथ ही निवास हो रहा है ।

मान-भंग

लै करवट बौवाय पुनि, माय माय कहि माय ।
मौन गहीं सुनि सखिन सब, रही गरे लपटाय ॥

मुख-चन्द्र

तरई तकत अकास सखि, जनि आँखिन दुख देहु ।
बिधुबदनी बैठी बगल, किन बिलोकि फल लेहु ॥१

सोहत रेसम सारि सँग, सखि मुख इत उत होत ।
जनु बादर बिच बिधु बसत, छन २ छनत उदोत ॥२

मुकुर कुसुम लखि चढ़ि चली, कच सुगन्ध पुनि पाय ।
चूमति चन्द्र पिपीलिका, पुहुप बास मिस आय ॥३

आँसू

बड़ बड़ बुंद बियोग बस, इन बड़री अँखियान ।
गोली खात खता कवन, नित मार्‌यो सत बान ॥४

पिय आवन दिन सखि नयन, भरि बड़रे अँसुवान ।
बैठे बाँधि बनूख किन, नित्य चलायो बान ॥५

तिल

मुख सुखमा सागर अगम नाविक नयन नबीन।
बूड़त बार बचाव विधि, तिल सुदीप रचि दीन ॥१६

तिल भिल्लक बालक बसै, मुख मिष्ठान दुकान।
मालिक ही सों प्रेम मम, करत मधुर रस पान ॥१७

तिल युत युवती मुख लहत सुखमो सहस ससंक।
अंक बिंदु बढ़ि बढ़ै छवि इत उत होत कलंक ॥१८

रूप रंग रचि चतुरई विधि हरख्यो अति हीय।
हिल्यो हाथ चुइ बुंद मसि, बन्यो बदन तिल तीय ॥१९

रंग रूप रचि अति रुचिर, विधि विचार मन कीन्ह।
लगै काहु की डीठि जनि, दीन डिठौना चीन्ह ॥२०

मन

अमल कमल मम मन बसो, विहरत भँवर अनन्द।
रूप रंग मकरंद नहिं, आयो इन किन फंद ॥२१

नई दुलहिन

दुलहिनि दुति झलकी परति, ऊपर पर्यो ओहार।
पलकी हलकी फूल सी, दुलकी चलत कहार ॥२२

मन्द मन्द मुसक्यात रहि, खरी खरी बतरात।
देखि सासु समुहैं मुहैं रही अधकही बात ॥२३

बेसर

सखि मुख यों बेसर बसति, सुखमो लहत अमन्द।
लटकि लपेटि सुसर्प जिमि, चूसत पीयुष चन्द ॥२४

मानिनी

मद मति तिय कह "कहत मन, मारहुँ अबहिं लबार"।
"नयन बान मरि मरि जियौं, हौं न अनगिनत बार" ॥२५

कामिनि काढ़्यो क्रोध करि, पिय सों हाथ छुड़ाय।
गिर्यौ गुलाब गरीब के, पुहुप पटल बिलगाय ॥२६

प्रेमिन बिच पुनि जनि परेसि, रे गुलाब अब आय।
लड़ैं लोह पाहन दोऊ, बीच रूई जरि जाय ॥२७

नीति

चाहत चैत चमार नित, सावन सदा मलाह।
जनम तरुनई पतुरिया, नाऊ बरस बियाह ॥२८

चलिबो छोटो है जगत, कह 'समीर' बड़ चीन्ह।
सीढ़िन बिच छोटो जिना, सबते ऊपर कीन्ह ॥२९

कह 'समीर' संगति सठन जस भूआ कर आगि।
सजन सनेह सुदीप मखि, लखि सम सोवत जागि ॥३०

कतक किरतघन जगत यह, देखहु भले बिचारि।
गारत पानी परदनिहिं, पानी राखनहारि ॥३१

विपरीत रति

लखि सपने बिपरीत रति, जगि लगि नखक्षत दैन।
अजौं जगावति मान तजि, पिय परतीति परै न ॥३२

अद्भुत युद्ध

सखी सूरमो सूरमो बारुद दुनलिनि माँहिं ।
सनह सारि सर अहस भौं धनु हनि प्रेमिन काहिं ॥३३

अद्भुत ताप

पीय नहीं परदेस ते, आये माघ समीर ।
छूवत सों सीतल लगत, करत ताप गम्भीर ॥३४

जल-क्रीड़ा

निज बेनी छाया लखी, जल महँ नागिन जानि ।
छाड़ि दुकूल उठाय भुज, भागी झपटि सयानि ॥३५

जल क्रीड़ा पियमुख भरम, लपकि कमल लइ चूमि ।
चुम्यो भ्रमर सीसी करति, परी तुरत सखि घूमि ॥३६

लोम-हर्ष

पसुपति थान प्रसाद हित, पहुँची जाइ नहानि ।
पाइ चढ़ायो पिय पुहुप, परसि पसीज्यो पानि ॥३७

इन्द्र-धनुष

मनि मोती मुकता मुँगा, नीलम सुबरन रंग ।
बिच बिच बेसरि बसत मुख, इन्दु इन्द्रधनु संग ॥३८

मिसी माँग मोती अधर, चख तिल टीको बिन्दु ।
तीय रंग सँग इन्द्रधनु, घन घूँघट मुख इन्दु ॥३९

कपोल

कतक बुलाई बकि थकी, बोलेहु एकहि बोल।
"चाहहुँ मिंहदी होहुँ मरि, चूमहुँ चारु कपोल" ॥४०

बैठी धरे कपोल कर, देखि छैल कहि "हाय !
भयहुँ न अँगुठी आगुरी, बसि कपोल रस पांय" ॥४१

अज्ञातयौवना

हौं किन अजहूँ बाढ़िहौं, बार बार कहि घारि।
"बाढ़ि बढ़ावहु जनि बिपति, बढ़ो बाढ़ि तरवारि" ॥४२

पीय चित्र सखि देखि, चूमन हित ऊपर उठी।
अरे हाय ! मोरि बेखि ! कटि महँ परि लचकनि गई ॥४३

कसि बैठति कस कंचुकी, कहि कहि कसति सयानि।
मसकति बीच कसाकसी, सकति न कारन जानि ॥

प्रात नई चोली दई मातु, समुझि सकुचाति।
सखि लखि मसकी कंचुकी, खसकि फुसुकि मुसकाति ॥४४

जाति युवति इमि यामिनी, दमकति दुति तम जाति।
कामिनि कोल कपोल पै, धरि हीरो हरखाति ॥
(कोल कामिनी जनु धरे, कानन मोती पाति) ॥४५

गावति छानति गंगजल, भरि भरि देति गिराय।
चितवत छबि इत छैल मन उत नहिं घैल भराय ॥४६

चित्र-लेखन

चित्र लिखति चूमति धरति, आँसुन भिगरत अङ्क ।
छटपटाति छिन छिन परति, लै लै पुनि परयङ्क ॥४७

गौंखनि धरति उतारि पुनि, चित्र [illegible] ।
उत छिपि छैल उठाउठी, लखियुत लचकनि लङ्क ॥४८

लिखि छवि, चूमि लगाय हिय पुनि पुनि देति बिगारि ।
परी परी सी पलँग पर, सीसी करति निहारि ॥४९

पट उठाय इक टक तकति, ठई [illegible] ।
टाँग्यो आँचर टोंग मन, उत [illegible] ॥५०

इत कत ऐंचत आँचरो, उत अनतै मन आँच ।
सौहैं खात सिहात नहिं, "साँचे को नहिं आँच" ? ॥५१

चित चलाय चोखे चखनि, छुरी छिरकि छवि लौन ।
ललन कहा हौं लहत जो, अजौं गहत अस मौन ॥५२

समुखी मुख दिखरावनी, देखति तिय सब आय ।
ललन जु दीनो मन भला, सो किमि परै लखाय ॥५३

तव सनेह रँग रँगि रही, क्यों हू छुटै न रङ्ग ।
कहा रँगीले छोड़ियत, रँग बजार बदरङ्ग ॥५४

"देवर दिखरावनि दई कहा" ? कहैं सब आय ।
मन पायो मनमौं सुमुखि, समुझि समुझि मुसुकाय ॥५५

अरी नवेली तजि कहा, नगर हवेलिन बास ।
गारी सहिबे की गरज, बसी गँवेलिन पास ॥५६

मोहिं माठा माँगन निते, मोहन अबहिं बुलाय ।
उतै उतारति आँथरी, गो छुइ छाति पलाय ॥५७

घैल उतारति छैल उत, हँक्यो छबीली नैन ।
छली अली भल छल ललन, निकसत कछु नहिं बैन ॥५८

देहु दही कहि मौन गहि, छाती छुई गुपाल ।
उतरावत अँथरी उतै, उतर न आवत बाल ॥५९

चन्द* न चोरैं दसन दुति, नाक बुलाक परी न ।
पै मोतिन मंजूख मों, सुबरन तालो दीन ॥६०

पिय हिय कर कङ्गन गड़्यो, धरि सखि ताख हमेलि ।
पूछति सासु न तउ ननदि देति, करति ठिकठेलि ॥६१

तिय हिय नित ही पिय बसत, सौति न लेहिं निकारि ।
चन्द्रहार चौकी जनहुँ, चौकी करति दुआरि ॥६२

सखि हिय मों पिय बसत, नित पै नहिं परत बिसास ।
झुँकि झाँकति देखति तुरत, दोउ दृग बिनहिं प्रयास ॥६३

मन-बन

मन घन अँधियारो अधिक, धौं बृन्दावन कुञ्ज ।
आवहु देखहु आज किन, बसि हिय आनँद पुञ्ज ॥६४

* बिज्जु

ललित अधर मुसकानि तिय, दसनन दुति दिखराति ।
किधौं बिंब फल लखि परत, दाड़िम बीजन पाँति ॥६५

अरुणिमा

अँग अँग आई अरुनई, आली के अधिकाय।
लाली ही लावत हरित मेंहदी पानहुँ राय ॥६६

केलि थकी कामिनि चरन दाबति ऐंड़ी देखि ।
केलि किधौं कौहर फरत, कहि २ रही बिसेखि ॥६७

[माधुरी]

वसन्त-भ्रम

चले मन्द हाथी दोउ मस्ती पाय घोड़ो खड़ो,
तिर्छे चारु फीलन की चाल बिकराल है ।
ह्वै भये गाहगाह लगी सह* साहैं जब,
तुर्त आय धाय एक खड़ो जनु ढाल है ।
ऐसी मतवालन की चाल सबै बाजत हैं,
ताते सब खेलवारे अति ही बेहाल हैं ।
पैदल वजीर साह कहत "समीर" वाह!
चाल सतरञ्ज को बसन्त की धौं काल है ।

—

* शतरंज के खेल में बादशाह के ऊपर दूसरे मुहरों के आक्रमण को 'शह' कहते हैं । यहाँ शतरंज का ही रूपक है—"समीर" ।

स्वप्न

सखि री बसन्त आयो, पीव पै न आयो अजौं,
पातीहू न आई बैठी जोवती ही रहि गई।
हृदै संका कीच बीच बातन निरासा बीज
नित ही बतकूड़ मों बोवती ही रहि गई।
आजु सखि सपने मों, पीव लखि अपने को,
बारहिं जगायो बार, सोवती ही रहि गई
चलत समीर प्रात, जागि गयो भागि गयो,
पीय नहिं देखि बेखि ! रोवती ही रहि गई।

वर्षा-वियोगिनी

ज्यों २ बारि बरसै अरु बहै बयारि बाँकी,
झाँकि २ इतै उतै प्यारी को उर दहै।
ऐसी यामिनी में सब कामिनी पिया के सङ्ग
करत कलोल हिय सबके हुलास है॥
दामिनी दमकै घन गोलो लौं गमकै, उठि
सेजि मों हुमकै स्यानी सूल ऐसो को सहै?
बार बार हूलै पै न बारि भूलै बार एक
बारह्व हजार हेरै तकियै लहै गहै॥
सुंदरी सिंगार करि सेंदुर सँवारी माँग
मोतिन सों पूरी पूरी परी सी लखाति है।
चलै चंचला सी मुख चन्द अकलंक ऐसो
परी परयंक पर लंक बल खाति है॥
पाती लिखि लिखै चित्र छाती सों लगावै धावै,
लखै उठि लाख बार बार ना लगाति है।
झाँकि २ भागै आँखि लगति न रोवै लागै
सारी भीजै सारो प्यारी परी बिलखाति है॥

वसन्त-विरहिनी

आये ऋतुराज आज छाये रतिराज साजि
साजि साजि आये देखी सखी सब पीयरो ।
पुहुप वितान औ लतान मों महक आयो
भायो सब जीव औ हुलास सब हीयरो ॥
कहाँ लौं कहौं री सखी, आज परभात देखी
काक हू को मैथुन विलोकि ताहि जी जरो ।
पूछी जाय जोतिसी सों एतो अति ठीक नीक,
बात सों बतायो है तयारी स्वर्ग की करो ॥

बिरह-बरवै

विरहिनियन कहँ ऊयो पूरन चन्द,
मारत मनहुँ मदनवा गोलाबन्द।
फूलन लागे बिरवा पल्लव लाग,
सूतल मोर बिरहवा अब जनु जाग।
सखिन जाति सब बगिया करति सिंगार,
फूलि रहे सब फुलवा मोहिं अँगार।
रतियन गनहुँ तरैया दिन नहिं चैन,
एक भये मोहिं सजनी दिन अरु रैन।
झुरि झुरि बहति बयरिया मोहिं न भाव,
बिरह बहनिया भभकी लगि जनु दाव।
जग कहँ देति जुड़ैया धौं यह जोन्ह,
नैननि बसै बलमवा मोहिं चकचोन्ह।
चैतहिं फूले फुलवा हियरौ फूल,
लगी झरनि फुलवरिया हिय भै सूल।
राहिहिं देखौं रहियन पै नहिं कन्त,
जोहत बीते जुगवा पै न बसन्त।
आजु पहिल दिन जेठवा ग्रीषम लागि,
गयो बसंत बैरिया भीषम भागि।
जरति रह्यौं मैं वैसइ पीय वियोग,
मारै जारि निदघवा नीक सँयोग।

उमड़न लगे बदरवा नित दिन राति,
मौति मोरि धरि पखना मनु मँड़राति।
झिमि झिमि बरसत बदरा बालम दूरि,
हिय कै हिय बिच रहिगै भइ नहिं पूरि।
टप टप टपकत देवा काढ़त प्रान,
चढ़्यो अकास अनँगवा मारत बान।
घहरि घटा नभ घेरिसि भै घनघोर,
उत नाचत बन मोरवा इत मन मोर।
अरे बेदरद बदरा देत कलेस,
बरिसत मोर अँगनवैं, की सब देस ?
कउई निंदिया सपना गइ मैं जागि,
मिलन न पाइउँ पिय से आँखि न लागि।
पीय मिले मोहिं सपने अपने जागि,
उठि बैठेहुँ मैं अँगना पिय गे भागि।
फर फर फरकत अँखिया बँहियौं बाँव,
कौन दिना पिय अइहैं कौने ठाँव ?
नान्हें केरि मिलनियाँ नाउनि मोरि,
पायँ परहुँ लै आवहु पियहिं बहोरि।
पतियन खोलि खिरिकियाँ छतियन देति,
रस रस बिसरी बतियन कै भइ चेति।
घर से जरि गै जियरा उठिकै भागि,
झरत सुमन फुलवैया बरसति आगि।

नँनदि गवावै गितिया लरिका रोय,
बलम बोलाय दुअरवाँ, अब का होय ?
सौतिन नँनदी निंदिया वैरिनि होइ,
पीय गये फिर अँगना मैं रहि सोइ।
साँझ बिछायूँ सेजिया होइ गा भोर,
जोइ रहिउँ भरि रतियाँ चंद चकोर।
दीप बाति भै उज्जरि हरवा जूड़,
फीक लगत मुह बिरवा हियरा बूड़।
मैं जोइउँ भरि रतियाँ, सोइउँ नायँ
कौनि सौति बिलमाइसि, अजहुँ न आयँ।

रति वर्णन

टूटे बन्द अँगियवा भइ रस लूटि,
बिंदिया माथ हेरानी बंदिउ टूटि।
रतियाँ रिसिही ननदि मनावन आय,
पीय पकरि मोरि बँहिया दीन जनाय।

बाँसुरी से बदला

लूटति है अधरान असी कबहूँ नहिं छूटति राह छुड़ावती।
है कबहूँ कर कान्ह के कूदति औ ब्रज माहिं धमार मचावती॥
पाती जौ पापिनी को कबहूँ तौ पछारि कछारन सों भरमावती।
छाती मों वा छलिनी के हजारन छेद छेदाय कै भेद खोलावती।
काँच भरावती वा मुख मों औ छतीसी के छेद कँवाच करावती॥

अब तो

हम तो हैं ठगी कुबरी है सगी, लगी है गत की लकरी लला जानैं।
घर छाड़िकै कानन माहिं बसैं बसै कानन मों मुरली ही की तानैं।
हिय को कहा हाल कहैं अपनो सपनो भयो स्याम सरूप नहानैं।
आइबो दूरि रह्यो अब तौ पुनि ये दुखिया अँखियाँ अरमानैं।
इक प्रेम की पाती लिखैं जौ कवौं तौ "समीर जू" हाँ हमहूँ धनि मानैं।

स्मृति

रूठिबो राधाऽरु माधव को पुनि पाँयन पै कर जोरि मनाइबो।
नाइबो त्यों गलबाँह कदंब की छाँह मों ग्वालन बाल बुलाइबो।
लाइबो कान्ह को कान्ह पै आली औ गाल की लाली गुलाल मलाइबो।
लाइबो वार न खीझिबो मैं पुनि रीझिकै आपु ही आप लजाइबो।
जाइबो आजु हजारन कोस पै औ कुबजा को मजा करवाइबो॥

आज्ञापालन

करि हरि को कहिवो हरखानी ।
जो सुख मिल्यो स्याम सँग सजनी सो सब रह्यो कहानी ।
आजु अनन्द अघाय आयगो जा हित हती दिवानी ।
कबहुँक हरि-बिधु-बदन पियासी, कबहुँक रहत गुमानी ।
पै यह सुख औरै कछु पायो, कहि नहिं जात बखानी ॥

जनवरी, १९२७]

ध्यान

दीठि किये अनिमेष कबौं दोउ दोउन ओर निहारयो करैं ।
डारि कबौं गलबाँहन डारि पै बैठि बहार बगारयो करैं ।
गालन पै कबौं लाल गुलालन के रँग की छबि धारयो करैं ।
जोड़ी गुपाल औ राधिका की बस ऐसी ही काज सँवारयो करैं ॥

ननदिया

ननदिया री तोहिं बलि बलि जाऊँ ।
जो मोरे पिय कहँ आनि मिलावै, ऐसो हितू कहँ पाऊँ ?
जनि मोसों कहुँ रूठु ननदिया, कर मलि मलि पछिताऊँ ।
कहु कछु काज सरै मोसों तव, तनिक बार नहिं लाऊँ ।
पाँयन परहुँ प्रान बढ़ि मानहुँ, छातिहिं तोहिं छपटाऊँ ॥

१६ मार्च, १९२५]

जी की

हाव नीको भाव नीको सुबच सुभाव नीको,
राग अनहत सी सुहावनी लगति है।
चन्द्रमा सों माथ हाथ दान भरे भोरे भल,
भटू की सुछवि अङ्ग अङ्ग उमगति है।
छन्द सी सुगति मंजु मोती सी सुमति ताकी,
रति भरी दीठि सों सुदीठि हू पगति है।
जी की हौं कहत, नीकी सुधि हू लगति तीकी,
फीकी सी फबनि त्रिभुवन की लगति है॥
ध्यान ही मों ध्यान गुन गाइबो ई ज्ञान मानों,
आठो जाम जी मों ब्रह्मजोति सी जगति है॥

उलाहना

(१)

न्यारी करौ हरि आपनि गैयाँ।
ना हम चेरी नन्द बबा की ना तुम हौ ब्रजनाथ गुसैयाँ।
आपु रहत मुरली मद मातो बैठि बजावो कदम की छैयाँ।
घूमि घूमि हम गाय घुमावति पाव न कतहुँ तनिक थमछैयाँ।
घोर घाम मों मरि मुरझानी, पीर करति करकति दोउ बैयाँ॥

(२)

थकि हारी हौं कान्ह सों ग्वैयाँ।
होत प्रात उठि ऐंठत आवत देखि बनत बानक अठिलैयाँ।
मों बगिया बिच ठकि ठाढ़ ह्वै छोरि देत सब गाँव की गैयाँ।
कबहुँक आय अचानक अभिरत मोरि सूनी अँगनैयाँ।
सखि सुहाति नहिं तनक तनक से कारे कान्ह की लरिकैयाँ।

वसन्त

अन्त लौं हिमन्त हू के हेरि हारी कन्त पंथ
अन्त लै हमारो हाय आयगो बसन्त है।
सिसिर सिरानो पचि प्रानहू पिरानो पापी
वापी बाग बीच बहु बन्हि बरसन्त है।
आपनो बिरानो भयो भाग हू हिरानो मानो
जानो नाहिं जात ना लखात ही दिगन्त है।
कूर है कलापी, कचनार औ अनार झार
मारहू की मार लौं करार अतिअन्त है।

मसा

बदन बनावत बिंरचि की मसी की बूँद
गिरि कै बसी औ करी तव दुति दूठी है।
कै सिंचि सुधाधर की सुधाभरी धारन सों
बसी सी समीप कोऊ बसीकर बूटी है।
है बन्यो निसान पंचबान बान मार्‍यो कैधों
रति राखिबे को निज अवनि अनूठी है।
कामिन को हीय हति टाँगिबे के हेत हाय
कैधों कामदेव ने गड़ाई खूब खूँटी है।
नीलम को नवल नगीनो धरो औरै कहूँ
नीबी नापिबे को धरी अनत अँगूठी है।
मुख को मसो है कै धँसो है हीय प्रेमिन को
माल पै मदन की कै मोहर अटूटी है।

१६-१-२७]

मुग्धा

(१)

लेसति है अंगनि अभूषननि अंगना सु
अंग अंग अब तो अनंग दरसो करै।
लंक है लचन लागी मचन मदन मारु
लगन लगन औ लुनाई ही लसो करै।
बात चतुराई भई चाल की तुराई गई
अधर सों मधु सुधाधार बरसो करै।
छिन छिन छगुनी छबीली छबि होन लागी
नित नित चित माहिं बालम बसो करै।
खसो लगै नीवी बंध कसो लगै कंचुकी हू
केतहू सयानी कसि कसि कै कसो करै॥

(२)

अलक मोर चख अलि अधर कीर कपोल चकोर।
झुकि परिहैं बरजौं अली, जनि चलु कुंजनि ओर॥

(३)

काई लरिकाई की कटन लागी पल पल,
तरुनाई की निकाई झलकान तन पै।
छोटी छोटी छाती अब उचकि उँचान लागी,
तिरछान लागे नैन पैन जन जन पै।

मन अनखान लागी लंक बल खान लागी,
कढ़न कटाक्ष लागी छोटन बड़न पै ।
गाथा हू गढ़न लागी त्योरी हू चढ़न लागी,
छन छन बढ़न चढ़न लागी मन पै ।
चित्त की लुटाई होन लागी है लुनाई सोही,
रति की रटन मों डटन लागी मन पै ।
प्रेम मों पगन लागी मन मों मगन होन,
अंग अंग अब अभिलाख लागी पनपै ।
मोरचा छुटाई को छुटन लागो, मदन के
मोरचा सों भोरी सो जुटन लागी रन पै ।

(४)

हिय मों हिलोर लागे जिय सरवोर लागे,
उमड़ि उमड़ि मन बोरत लहर है ।
ठहरन लागै कहूँ ठहर न लागै कहूँ,
सोर होन लागो अब डहर डहर है ।
बार बार बँचन सु बाँके बाँके बीर लागे,
तचन सरीर लागे बरसि जहर है ।
मोरचा मदन को रचन लागी अनजान,
कहर मचन लागो आठ हू पहर है ।

—※◇※—

प्रेम-पन्थ *

प्रेम को पन्थ परम कठोर

कोमल जाल मृनाल-तन्तु को, बिच नाचत मन मोर;
टूटि न जाय डरत छन-छन मन, बँध्यो नेह की डोर।
चातक को कैसो व्रत भारी, बरसै अमृत अथोर।
तौ हूँ कबहुँ न पीवत प्रन बस छाड़ि स्वाति जल और।
कहँ मयूर, कहँ घन नभ ऊँचो, नाचत लखि तेहि ओर;
दुख-सुख गनत न लोक-लाज कछु, पावक खात चकोर॥

* इस कविता पर लेखक को दो वर्ष पूर्व माधुरी-पुरस्कार मिला था।

भाव

सीय साँवरे को सबै सीत के सबेरे घेरे,
सीय सहचरी खूब खिचरी खवावतीं।
बीछी बीछी बात पूँछि बूझि अनबूझि बनि,
बिलम लगावतीं औ सीत मों कँपावतीं।
नाम लै लै भाइन को जो जो मन भावै आवै,
गनि गनि गारी देतीं भावन सों भावतीं।
गुन ज्ञान वारे तप जप जोग वारे जाको
गुन गाय पावत न गारी ताको गावतीं।

धाइबो

धाइबो हाथ गुवर्धन धै, लकुटी लै लला मटकीन पै धाइबो।
धाइबो वा जसुदा अँगनैयाँ, बकैयाँ २ बलैया लिवाइबो॥
बाइबो वा मुख माटी भरो, जसुदा को डराइबो धाय लुकाइबो।
खाइबो बेर न बेर लगाइबो, वेरन बेर ही दास बचाइबो॥

—◇—

कुचद्वय

कंचुकी कवच कसे कैधों कयलासपति,
काम जीतिबे को धारे रूप सुभटन हैं ।
मैन ऐन माहिं परकास पाइबे के हेत,
लागे द्वै दबाइबे को बिद्युत बटन हैं ।
कधों गरबानी रति रानी को जगाइबे
मनाइबे के हेत टँगी दुइ घनटन हैं ।
यौबन के भौन काम चोर चढ़िबे की खूँटी,
भूमि तन तीको के अमीन निउटन* हैं ।

खण्डिता

छातिहिं छपटी बिंदरी कजर कपोल ।
पान पीक रँग नैननि निंदरी बोल ।
माथ महावर हथवाँ चंदन लाग ।
सेंदुर रँगी जुलुफिया लटपट पाग ।

[मनोरमा]

* न्यूटन नामक प्रसिद्ध गणितज्ञ जो अमीन के पद के लिए सर्वथा योग्य है । —'समीर'

चित्र-चुंबन

सखी न सहेली बैठी नवेली अकेली घर,
रहि रहि हिय माहिं हहरि २ जाति ।
ऊँचे लटकाये पाये हाथ हू न लपकाये,
प्रेम की पियासी आँखि उमड़ि २ जाति ।
उचकि २ चित्र चूमति छबीली पी को,
गिरि २ पलँग पै दुमड़ि २ जाति ।
बैठति उठति उठि बैठति नितंब–कुच-
भार बार २ लंक लचकि २ जाति ।

पुनर्जन्म

(१)

छैल छबीली को चुम्बन होउँ
के चन्दन ह्वै के सुवास बगारौं ।
मोरपखा मुरलीधर को वनि,
माथ को मैं श्रमबिन्दु निवारौं ॥
कै कल कंगन ह्वै कर को हरि-
राधिका के सब अङ्गन चारौं ।
नूपुर मंजु बनौं वृषभानुजा के
पग मों परौं बार हजारौं ॥

(२)

कान्ह की काली वहै अलकावली,
बावली ह्वै कै फिरैं जेहि पै लली ।
राधिका नूपुर की धुनि जा सुनि
बेद हू की धुनि ह्वै पगली चली ।

कोटिन यज्ञ सों पावन बावन
के पद सों पददा फलदा थली
वा जमुना की किधौं करियो मोहिं,
गोकुल गाँव मझारन की गली ॥

(३)

छिति ह्वै छ्वै माधव चरन, जल बनि जमुना नीर ।
पय पावक गगरी गगन, बँसुरी बसहुँ समीर ॥*

(४)

ह्वै हरि को हिरदै–हरो हास हौं
बास करौं नित बाँस की बाँसुरी ।
कै दधि दोहन को बनि घोष सुबेस
धरे घर घोष निवासुँ री ।
रास की राति कै रासरी माथनी की
कै दमोदर पेट की रासरी ।
एतो मों एकौ बनावौ जु मोकों
तो काहे परौं हरि फेरि कै फाँसरी ।

(५)

जौ छिति होहुँ तौ छाती लगावहुँ
गोड़ गुपाल को गैयन खेदन† ।

---

* पंचतत्व का बना शरीर फिर पाँचों तत्वों में पहुँच कर कृष्ण की सेवा करेगा ।

† खेदना (खदेरना)=भगाना ।

जौ जल होहुँ बहौं जमुना बिच
वा बनि माधव माथ के स्वेदन।
पावक ह्वै पकवान पकाय
खवावहुँ गोकुल ग्वाल के गेदन*।
होहुँ समीर तौ जाइ बसौं
बनवारी की बावरी बाँसुरी छेदन॥

(६)

बाँस जौ होउँ तौ बाँसुरी को ही
औ चाम तौ पायन मों परिबो परै।
काठ कठोर तौ ऊखल को,
मथनी बनि वा दधि सों लरिबो परै।
ह्वै रसरी जु पै बाँधौं दमोदर
ऐंठ न जाय चहै जरिबो परै।
मानुष होहुँ तो बाल गुआल
गुपाल के गोहन ही रहिबो परै।
छाछ को छानिबो बाँधिबो बाछ को
कान्ह के काज कछू करिबो परै॥

---

* गेद, गेदहरा=बच्चा;

(७)

रहिबो मोहिं संग सदा हरि के परै
ग्वालिन गाँव गँवारन ही करौ।
कैधों गुपाल की गाइन के चरिबे
कहँ मोहिं वहै बन ही करौ।
या मों जु चाहौ बनाओ बिरंचि जू पै
पुनि हाँ तजि कै न नहीं करौ।
राधिका पाँयन की मिंहदी प्रभु के
पद पंकज की पनहीं करौ॥

(८)

माथ की राधिका के टिकुली
लकुटी हरि हाथ की नाथ बनाइयो।
ग्वालन गात की कामरी के पुनि
ग्वालिन घामरी भामरी धाइयो।
कै गलहार नवेली लली को
लला अपनी छतियान लगाइयो।
ह्वै लटही लटकौं ललिता को
जु ताको प्रभू निज हाथ सजाइयो॥

माली

नैन कंज अंजन पराग अधरान बिंब,
दाड़िम के दाने सों दसन दुति पायो है।
चंपक कली सी नासिका सुरंग चंपक को,
चिबुक के कूप रस सींचि लहरायो है।
श्रीफल उरोज गुलबदनी बदन माहिं,
न्यारी औ नवीन कल क्यारी सरसायो है।
जाबिर जमीनदार मानहुँ मनोज जू को
स्वागत करन काज कदली गड़ायो है।
जोबन जुगुतिदार मंजुल मजेजदार,
मालदार मनहर माली बनि आयो है।

[मनोरमा]

शैशव

कबहुँक लरिकाई सुधि आवत।
छोटि छतुरियन तानि तानि कोउ गाइन पाछे धावत।
कबहुँ जात बन बीच पढ़न कहँ बानर बहु डरपावत।
भागत कबहुँ रेल सीटी सुनि रोरन रारि मचावत।
साथिन सँग कहुँ कठ-घोड़न चढ़ि चित-घोड़ो दौरावत।
पनहिन पाँय पखारि झारि पुनि बरहन बिच अन्हवावत॥

अज्ञात-यौवना

दरपन देखति बिधु-वदनि, सूघति करन-सरोज।
चक चकई को पींजरा, खोलति लखति उरोज ॥

दीपति दुचन्द दुति अंग अंग अंगना के,
दरपन देखि बिधु बदन बनावती।
अलकनि अहिगन जानि जानि छुवति न,
नैननि मूँदि भागि लट छिटकावती।
लीक कसतूरी को जानि जानि रोम राजि,
पोंछि पुनि पुनि कर कंजन सुँघावती।
उचकि उघारति निहारति है बार बार,
लाख बार लखि लखि समुझि न पावती।
चक चकई ही बूझि बार बार भोरी बाल*,
होति है निहाल औ बिहाल ह्वै लजावती।
दाँतन को दाड़िम के दाने जाने, होंठन को
बिम्ब बूझि बार बार बारि मुँह बावती।
अंजन सों पोखे नैन खंजन के धोखे धरि,
सुक नासिका निहारि खोदि कै बुलावती।

---

* कुच भार

भरम न पावती है भरम भुलावती है,
भावन सों भावती है चित्तन चुरावती ॥

आठौ जाम जब जब लागी है बदन बाल,
पागी है सनेह चासनी मों बिकसी रहै ।
हँसनि गसनि औ कसनि अँग अङ्ग आई,
छाई मधुराई की निकाई निकसी रहै ।
उरज उँचाई औ कचनि चिकनाई धाई,
सुखमा सलोनी सदा मुख पै लसी रहै ।
तकनि तिखाई हुलसाई हिय माहिं आई,
बालम के हीय मों हमेस ही बसी रहै ॥

छवि

जोरि के जुन्हाई के समेटि सोन घट माहिं

अमिय निकाई पाई बिधि हू नई-नई ?

सरग-सरोज सों झर्‌यो है मकरंद कैधों

छीरनिधि मथि कौन सुखमा दई दई ?

सोने में सुगन्ध कैधों मोती मों मिठास डारि

डारि देवतरु तोरि छबि बनई गई ?

कविता-कसौटी कैधों कल्पना-अकास-ऊषा,

नैननि-कुमोदिनी को जोन्ह उनई नई ?

[माधुरी]

नीति-नवक

देखि न पावै कोऊ नींद नहान।
सँझलौका* भै भोजन, सुघरि बखान॥
आठौ जाम अगिनिया पनियौ जूड़।
रहै न अस घर गिहिथिनि,[1] बसै बूड़॥
लरिकन कै तोतराई गोरस तोर†।
सुनि न परै जेहि अँगना, घर न निहोर।
धूँअठ[2] घर माँ लरिका नींद बिहान।
दुपहरिया कर कुचरी, फूहरि जान॥
घस-पस[3] बैठी अँगना हेरै मूड़।
कौन काम अस दुलहिनि, रहु बर बूढ़॥

---

* गोधूली ; †"यत्र नास्ति दधिमंथन-घोषः" इत्यादि का भाव;
१ गृहस्थिनि=स्त्री ; २ धुआँ-भरा ; ३ उलटा-पलटा।

गंगा बहीं अँगनवाँ जमुना दालि।
सारी[४] भई ओसरिया,[५] कवन हवालि?
रोटी भई चिपरिया लपटा भात।
तारि देइ सो बहुअरि[६] पुरखा[७] सात।
लरिकन हित लचराई भतरहिं रोस।
सासु ननद कर झगरा, कवन भरोस?
डेउढ़ी भइ घुड़सरिया, लोढ़ौ[८] टूट।
फूट परा है चुल्हवा, भगियै[९] फूट॥

—✤◇✤—

पहिला पार पतुरिया पहिलौ पूत।
पहिले लहरा[१] कौआ, कूत[२] बहूत॥
निसि बैसाख अँजोरिया, हेरै गाय।
लिहे लम्प बैसखवै-नंदन[३] बाय[४]॥

---

४ पशु-शाला; ५ बरामदा; ६ बहू; ७ पूर्वज; ८ लोढ़ा=बट्टा; ९ भाग्य।

१ वर्षा; २ कूद; ३ बैसाख-नंदन=गदहा, मूर्ख; ४ है।

बरवै-विलास

काई लागि अँगनवाँ निसि निचलाइ ।
हेरति रही कँगनवाँ गिरि बिछलाइ ॥
आँचर रँगी किनरिया गोरिया केरि ।
पखना धरे सँपिनिया हिय डँसि हेरि ॥

बिजुरी बाँक बिजायठ बाजूबंद ।
झूमक झाँझ झुलनिया बिच मुखचन्द ॥
किंकिनी औ करधनियाँ कँगना कूर ।
कुजुगुति करत रैनियाँ, परत न पूर ॥

अँगिया अनवट बिछुआ बिरिया ऽगूँठि।
सजी सेज नहिं आयो, की गे रुठि ?

यकि यकि कै आभूषन अली उतारि।
धरिउँ बिछाय पलँगिया, कहुँ न मुरारि !

काढ़ि धरिउँ मैं कँगना मुड़वारीन
भा बिहान मोरि वहिनी ! बनवारी न।

महतो गये मोकदिमा सासु बजार।
पीउ गये परदेसवाँ, जिय जरि छार।

अरे कसाइनि कैली, डारिहिं डारि
बोलति बाग बिरिछवन, मोरि दुआरि ?*

मारि मारि मन मानहु मैना मोरि।
पीउ पीउ कहु फुरि फुरि, राम निहोरि।

सुनरी चतुरि नउनियाँ पियहिं बुलाउ।
नान्हें केरि मिलनियाँ, मोहिं मिलाउ॥

---

* × × × × डारहिं डार
बाग बिरछिवन बोलति कै मोर द्वार ?

गोस्वामी तुलसीदास

कलिजुग कलुष-नसानी पुन्यखानी रानी
जाहिर जहान बीच बिस्व-सनमानी है।
सुरपुर सुजस सराहैं सुरगन सब
सुनि सकुचानी देवी सारदा सयानी है।
कलपि कुबेर जात गावत गनेस गुन
ब्रह्मा हू बदन निज बिरद बखानी है।
जिय जानी जीभ जानी स्रवन* सरीर जानी—
बानी एक जानी श्रीगुसाईं जी की बानी है॥

* सकल

कलियुग

कायर पै किरपा है कुबेर की सायर पै सबकी निकसी रहै।
मूरख को मिलै मालपुआ अरु पंडित को परसी लपसी रहै।
कूरन पै हुलसी हैं सरस्वति घूरन पै तुलसी विकसी रहै।
नीच रहैं नित नीके निहाल बड़ेन के बीच विपत्ति बसी रहै।

क्यों ?

कुच कटि कचनि कसूर कहु कहँ कीन्हें कब काहिं ?
मुरि मरोरि बपुरे बँधैं कंठ कूर लपटाहिं ॥
कुच कठोर कटि छीन कच केलि काल परि पाछ ।
कंठ काढ़ि सब कछु भयो मिलिबो हित अति आछ ॥
उत उर कोमल कमल इत उरजन कठिन कठोर ।
कहु री अस कस-कस भयो ? मानति नहिं मति मोर ॥

सिखावन

जकरु जंजीर कटि सारी जरतारीदार,
जेहरी औ जावक जुगुतिदार करु री।
कंकन कलाई अँगुरीन मुनरीन, मलु
मेंहदी करन ही-हरन हार धरु री।
पायन में नूपुर अनौट अँगिया सुबंद,
भाल लाल बिंदी भुज बाजूबंद जरु री।
एतो हू सिंगार पै न रीझै साँवरो री सखी
और न उपाय, बस पायन पै परु री॥

मान-मोचन

कर केर कंगन औ भूषन सुअंगन को,
पान पीक नैननि को* रंगन हटाय के ।
करधनि कटि की कटारीदार किंकिनी,
सुसंगिनी सनेहिनी को संगहू छुटाय के ।
झपटि झपटि झट भूलनी झमाकेदार,
झाँझ झुमकान को झमेलो निपटाय के ।
कहि कहि बातन बनाय कै बहानो बहु,
सखिन सहेलिन-ऽसमंजस मिटाय कै ।
'लाल लाल' लाख बार सिखराय सारिका को
परिचारिका को पूजि लाखन लुटाय कै ।
मेटि कै मुटाई मन मुद मानि मिलिबे को
मोहन सों बैठी बाल जतन जुटाय कै ॥

---

* आँखिन औ ओठन के

जल-विहार

राधिका औ स्याम रति-काम सों रमत जल
जाय छवि झाँकी बाँकी ऐसी दुति झलकात।
कैधों घन दामिनी गिरे हैं सिन्धु व्योम टूटि
लूटि लूटि प्रेम मिलि छूटि छूटि ललचात।
मोती हीरा हारन सों जल के फुहारन सों
जानो जात उगिलत एती छवि छलकात।
सकुचात नियरात हुलसात अकुलात,
कहत न बात, नहिं बात कछु कहि जात॥

३१ जूलाई, '२५]

तुम पै

कारे-सित वारे रतनारे अनियारे नैन,
मैन से सँवारे प्यारे नन्द के दुलारे हैं।
स्यामल सरीर वारे कारे कारे घुँघुरारे
केस वारे वारे बसुधा के रखवारे हैं।
मोर को मुकुट मौलि पीत पट फहरात,
लहरात गर बीच बैजयन्ती धारे हैं।
भक्त-भय-हारे पूतनारे राधिका के प्यारे,
तुम पै ही तन मन धन हम वारे हैं॥

२७-६-२५]

धोखा

प्यारी प्यारी सखियान "प्यारी प्यारी" कहि कहि,
बातन बनाय फुसकाय फुसिलाय लेति।
न्यारी न्यारी होइ गहि गहि हाथ माथ छुइ,
गरबाँही दइ २ रहि चोरि चित्त लेति।
बाग बीच पहुँची चलाई ब्याह बात बढ़ि,
बढ़ति न बारह्र बहानो करि करि केति।
"कारी कारी" कहि कहि कान के सुनत देखि
बारीबैस वारी बैसवारी बारी गारी देति॥
दिन गनि बहुत बहुत बनि बनि हितू,
केती २ बातन बनाय बिरमाय बाल।
रेत रेत रबिजा के तीर तीर खेत खेत,
आई धाई साँझ लै निकुंजन भई बेहाल।
इत उत ताकत रही सबै अजान है
हीय मों निहाल नैन देखी बाल नन्दलाल।
भौंहन तेरेरि मोरि मुँह माथ लाल लाल,
लोचन सों मारैं ताकि ताकि मीजि मीजि गाल॥
३१–७–२५]

दोहे

छुटी छबीली अलक अलि लटकी लपकि उरोज।
बस्यो शेष मंदाचलहिं मनु मनि मथन मनोज॥
भरी दुपहरी खेलियत आँखि-मिचौनी, चोर
सखी होत वे ई दोऊ राधा नंदकिसोर॥
सोर करत कछु कछु गड़त, धरि उतारि परयंक
आभूषन, अँगुरिन रह्यो मुनरी, मुनरी लंक॥

सोमाँ, बस्ती
२७-६-२४

बिरहिनी

मारै मोहिं पिचकरिया सखि हुलसाय[1]।
बरसै बिरह बहनिया मोहिं न भाय।
होली खेलै सहेलिया नीक न लागि।
मोहिं अबीर भुँभुरिया, कुमकुम आगि॥
दरजी मोर देवरवा सिय मोहिं देहु,
जाड़न मरहुँ, भुलौआ[2], पिउ नहिं गेहु।
बोलन लाग मुरुगवा अजहुँ न आय।
सौति रही कोउ सखि री! पिय बिलमाय।
जोवति जोवति सजनी होइ गा भोर।
लाली उठी अकसवाँ, हीय मरोर॥
बैठी बैठी बहिनी! बितइउँ राति।
ताकि ताकि अन्हियरवाँ[3] दियना बाति।
दियना! मोर दरदिया जानहु नाथ!
जरत रहेउ भरि रतियाँ मोरे साथ।
होत प्रात दिसि प्राची लाली लागि।
भूजन[4] कहँ बिरहिनियहिं की बन आगि?

---

१ सब आय; २ चोली; ३ अँधेरे में; ४ भूनने, जलाने;

बाजति मधुर मुरलिया मधु बरसाति।
रस रस सुरति बेइलिया[1] हिय सरसाति ॥

पापी हेरे पपिहरा पिउ पिउ सोर ?
राम राम कहु बाउर[2], अब भा[3] भोर ।

टोइया[4] टोवत जियरा[5] का अब मोर ?
राम रटनि तजि बोलहु पी पी भोर ।

चित लागि चितवनियाँ चञ्चल नारि,
पहिले जूड़ि चननियाँ[6] अब जिय जारि ।

गये बलम अधरतियें तजि मोर कोर ।
छपटाइउँ मैं छतियाँ तकियै भोर ॥

जाड़न कँपै करेजवा पिय जब गेह ।
बैठे जाय बिदेसवाँ दहकति[7] देह ॥

बरु निखरहरी[8] खटिया, टटियौ[9] टूटि ।
सिर तर जौ पिय जँघिया, सेजियौ झूठि[10] ॥

आवै कैसे निंदिया, कस लग भूखि ?
बसै नैन नित पियवा, हिय गै सूखि ।

---

१ बेल ; २ बौरा=मूर्ख ; ३ हुआ ; ४ एक प्रकार का तोता ; ५ मनकी टोह लेते हो ? ; ६ ठंडी चाँदनी ; ७ दहकती है ; ८ नङ्गी ; ९ टट्टी ; १० सजी सेज भी उसके सामने कुछ नहीं ।

बरवै-विनोद

अगिया आनन आई धोबिनि धीय[1] ।
गई लगाइ सो अगिया पिय के हीय ॥

अली आजु अधरतियाँ अँगना आय
कौन मीत ना जानहुँ दीन जगाय ॥

सौतिनि ये दुइ अँखियाँ आजु पिराति ।
मिलै न कोउ बैदवा[2] बिगरी बाति ।

---

१ लड़की ; २ वैद्य ;

भरति कूप पर पनियाँ तरुनी तीय।
दीपति जस दरपनियाँ[1], झलकत हीय॥

भरे डेलरिया[2] फुलवन दमकति जाति।
दमकति साँझ मलिनियाँ जस दिय-बाति।

आवहु अबहिं सजनियाँ सोवहु राति।
हौं घर आजु अकेली बहुत डराति।

टोना लाग्यो मथवाँ, बहु खजुआय[3]।
नीक करहु री ननँदी झारि फुँकाय[4]॥

आनन आई अगिया हिय दइ आगि।
चित्त गड़ा चितवनियाँ, भभकन लागि॥

चुम्यो चोख चख चित मों, चैन न पाव।
चंचलि चमकि तिरियवा फेरि न आव॥

धाय धाय घर आवै धोबिनि धीय[5]।
धप-धप धोइसि धोतिया लइ मन पीय।

बाजत उतै बजनवाँ गौनें जाति।
गाजत[6] हिये सजनवाँ, समुझत बाति।

अँखियन बरस अँसुइया, हिय हुलसाति।
सखियन सँग तजि सजनि सजन घर जाति।

---

१ दर्पनी=दर्पण; २ डेलरी=टोकरी; ३ खुजलाता है; ४ झाड़ फूँक करके; ५ लड़की; ६ खुश होता है;

सासु गई नैहरवाँ, सासुर नंद ।
सून भयो घर सजनी, कहु न अनंद[1] ।
पिय हिय गर कर कँगना गड़न जु लाग
काढ़ि बहाइउँ अँगना होइ गा जाग।
गई भुजावन भुजवा भुजइनि भार ।
कौन घाट रहि अटकी ? कीन्ही बार[2] ।
ठाढ़ि भुजावति भरवा भोरहिं भोरि ।
जाति लौटि लै भुजवा जियरा छोरि ।
भूजति भोरि चबैना भोरहिं भोर ।
उतै जरावति चउरा इत चित मोर ॥
घरवाँ परिगे सोवता, निसि अँधियारि ।
हरियरि पहिरे सरिया निकसी नारि ॥
प्रातहिं पहिरिउँ अँगिया, मसकनि लागि ।
देखि देखि सखि मुसुकें, फुसकें भागि ॥
लरिका परा बलमवाँ, सँझवें सोय ।
पानी छिरिकि उठावौं, उठि कै रोय ॥
जब जल छिरिकि जगावौं, जगि बौवाय[3] ।
लेउँ उठाय कनियवाँ[4], जाय चुपाय ॥

---

१ भयो आनन्द ; २ देर ; ३ बड़बड़ाता है ; ४ गोदी में ।

(२)

पँखुरियाँ

उसी

अमर आत्मा की सेवा में जिसकी महिमा की झलक
इन एकाध पंक्तियों में मिल सकती है।

———◇———

समर्पण

नहीं हैं प्रभु ! ये मेरे छंद,
आँसुओं के केवल हैं बूँद—
ध्यान में, चिंतन में अथवा
तुम्हारे ही जो ढलक पड़े ।

हैं सभी खारे, किंतु प्रभो
हृदय का क्रंदन उनमें है—
सुख-सना कभी, दुःखभरा कभी—
तुम्हारे ही हैं दोनों, लो ।

क्या ?

हूँ अधकच्चे प्रेम का कम्पन,
उभरे यौवन की लाली;
हूँ अधखिली कली की मुसकन,
बिछुड़ी बुलबुल का हूँ गान;

माता का चुंबन, बच्चे की
तुतलाहट हूँ—मुरझाये
हूँ गुलाब की पँखुड़ी बिखरी—
हूँ निरास भौंरे की आस;

मधुरस भरी गरल की झाईं—
जल से लदे बादलों की
परछाईं हूँ—हरी घास की
बिनती हूँ मरु में छपटी;

परवाने का पहला फेरा,
दीपक का पछताना हूँ;
चुप्पी साधे आँधी हूँ मैं,
हूँ भूडोल मौन मारे;

बाट जोहते दिल की धड़कन,
नयनों की बेचैनी हूँ;
आहट हूँ उत्सुक पैरों की,
थके प्रेम की झपकी हूँ;

हूँ टूटी गिलास की मदिरा,
हूँ अधखुला किसी का ध्यान;
हूँ अधभरी आह ठंडी सी,
हँसती आँखों का आँसू।

यदि

मधुर उस मदिरा की दो बूँद
कहीं मिल जाती तो उसमें
देख लेता मैं परछाईं
विश्व के वैभव की सारे;

भूल जाता क्षण भर में सभी
कालिमा उसकी झाईं में—
लगाता मादकता की थाह
झूम कर उस गहराई में।

दीठ का फेर

खोजने जाऊँ किधर तुम्हें—
खोजने से क्या पाऊँगा ?
दीख पड़ते ही नहीं कहीं—
दीठ का ही तो है बस फेर ।

(२)

सुना है रहते हो सर्वत्र—
सभी में करते रहते बास;
नहीं हूँ लख सकता हे नाथ !
दीठ का ही तो है बस फेर ।

(३)

किसी से धोके में लस रहा,
किसी को भ्रम में लिया बटोर* —
मुझे धुँधले पागलपन में
तुम्हारी छाया ही लख मिली ।

* समेट

आशा

द्वार हैं खुले आसरे में
आपके आने के हे नाथ !
आँख को आलस है लग रहा—
बाट जोहते जोहते थकीं।

कल्पना में कितने ही शब्द
सुने, स्वप्नों में क्या क्या दृश्य
दिखाई दिये—सभी विस्मरण
होगया—आशा पर न गई।

प्रतीक्षा

लगे थे बादल भगने ही,
बालुका-मय आँधी का भी—
शांत झकझोर हो चुका था—
चाँदनी थी पर खिली नहीं ।

टूटी मड़ई का नीचा द्वार
खोलकर ताका बाहर और
तुम्हारा स्वागत करने को
टटोला वह नन्हा दीया—

* * * * *

लिये दीपक बैठा रह गया
नाथ ! आशा में सारी रात—
तुम्हारे आने की आहट
सुनी, सन्मुख लख पड़ी झलक

तुम्हारे मुख-मण्डल की तुरत—
हृदय की कली हुई विकसित,
पलक खुल गई ; न देखा कुछ—
रह गया कलप-कलप कर मन ॥

उपचार ?

कहाँ बुलाऊँ नाथ तुम्हें ? इस पर्णकुटी में ?
क्या आदर दूँ—बस बिठलाऊँ भाव-भवन में ?

हृदय-पद्म के मधुर पराग,
चित्त-पट के सुललित अनुराग,
नयनों के मेरे अञ्जन,
मेरे स्मृति-पथ के खञ्जन !

पाऊँ कहाँ अधर रँगने को पान, कहाँ चन्दन पाऊँ ?
रँगे प्रेम-रँग में हो तुम तो, सुरभित हो श्रद्धा-साने ।

अकिंचन घर के इस कंचन,
कंचनों के कुल के संचन ।
अङ्ग-अङ्ग के मेरे स्पंदन,
पग पग के मेरे अभिनंदन !

मिलने की इच्छा है प्रभुवर ! पर मिलता उपचार नहीं—
मुझको यही भरोसा है बस, इसका तुम्हें विचार नहीं ।

दुःख के, दुर्दिन के, सुविलास,
करुण-क्रन्दन के निद्रित हास,
भग्न आशाओं के आकाश,
निराशा के अंतिम अभिलाष !

मिलन

नाथ ! बतला दूँ आज कहो,
हृदय की गाथा मेरे कौन
जानता है ? बस केवल तुम्हीं
कोष-रक्षक हो उस निधि के—
यदपि धन है कुछ और नहीं;—

दुःखभरा ध्यान, सुखद स्मृतियाँ,
कभी आशा की साथी साँझ,
बाट वह घबराहट की कभी,
टकटकी बँधी आँख की रात,
पलक का मारा पापी प्रात;

फिर वही मौन मिलन, मुसकान—
न कुछ सुनना, न सुनाना—बस
पुरानी पोथी के पन्ने
प्रेम के पगे, खुल पड़े स्वयं—
आप ही आप पढ़ उठे सब;

चित्त का सारा कंचन, जो
युगों का संचित था, बिछ गया
प्रभू के पैरों के नीचे—
धरा के धन में था क्या धरा
और जो तुमको देता मैं ?

स्वप्न

(१)

स्वप्न क्या था, ताड़ना थी,
न जाने था क्या संचित पाप;
मन ने मोल ले लिया व्यर्थ
अनोखा झगड़ा अपने आप।

(२)

मैं तो चिंता में था मग्न,
मौन थी साधे सारी सृष्टि;
अचानक पैरों की आहट
आ गई—उधर पड़ी जो दृष्टि,

(३)

वही थी मूर्ति, उन्हीं का मुख;
पास जब पहुँचे मैंने कहा,
"कहो थे कहाँ ?"—न बोले वह,
चल दिये; खड़ा मौन मैं रहा।

(४)

न रोका ही, न पुकारा फिर,
टकटकी बाँधे ही रह गया।
रूप वह आँखों से ओझल
हुआ, बस आँखों में बस गया।

(५)

चक्षु के द्वार खुले ज्योंही,
भग गया स्वप्न चोर सा निकल;
आँसू भी न बह सके हाय !
हृदय रह गया विकल का विकल।

—❦—

स्मृति

अधर में आधी ही मुसकान—
अधमरी नागिन सी लट खुली;
कटाक्षों की कोरों में यों
पड़ा था कज्जल, जैसे भ्रमर
लस रहे कमल-कोश में हों।

(२)

नयन से नयन मिले हो चार—
बनी अलियों की अवली अदृश्;
शिलीमुख के ही शर फिर चले
भौंह की धनुही पर कुछ देर—
समर था वह भी अद्भुत ही।

(३)

कपोलों तक पहुँची झट हँसी,
कुण्डलित होकर नागिन ने
लिया जीवन को तुरत समेट;
अधर से आँखों में अनुराग
आगया—सुरभित हुआ पराग ।

(४)

चुम्बन क्या, चुम्बक होगया—
उसी में चित है चंचल टँगा ।
मौनता के वे सारे भाव
गूँजते हैं बन बन कर चित्र
हृदय के कानों में अब तक ।

उनका

हाँ कह देना प्रभु की हाँ में,
उनकी कृतियों की करना
सदा सराहना—बस है मेरा
इसमें ही संतोष धरा ;

उनके ही फूलों में रँग है,
उनके ही जल से है प्यास
बुझती इन आकुल अधरों की—
उनकी ही करुणा का त्रास

देता है मुझको वह जीवन
जिससे नित हुलसा रहता ;
उनके ही बस छू देने से
हो जाता हूँ मैं वीणा ;

उनके ही तकने से बहते
हैं मेरे आँसू बन गीत—
उनके ही चरणों पर गिर गिर
हो जाते हैं अमर अमोल

—:o:—

उपदेश

मानता, मेरे मन, क्यों नहीं ?
मूक क्यों रहता नहीं बना ?
सभी गाथा अंतस्तल की
खोलकर कहता फिरता है—
यही है तेरी मूरखता ।

सभी क्या हैं तुझ से ही सुजन,
जानता है क्या सब को सुलभ ?
सरलता जग से है उठ रही,
विश्व की भाषा तो ले सीख—
बात है बूढ़ों से करना ।

अभी बचपन की तुतलाहट
गई तेरे होठों से नहीं;
समझ कैसे सकता है भला
भले चंगे वाचालों की
कुटिल क्रीड़ा ? चुप रहना ही
दवा है एक मात्र इसकी—
न सब की सुने, न अपनी कहे,
घूँटकर पी जा भीतर ही
रोष, दुःख, चिंता, विस्मय, हर्ष—
नहीं फिर होगा कुछ खटराग ।

१४—३—२७]

बूँद

डपट कर बिजली बोल उठी,
बादलों से, "हो भगते कहाँ ?
झोंकती हूँ आकर के मैं,
सभों को एक एक कर अभी।"
चंचला कड़क उठी यह कह,
चमक झट छिटकी चारों ओर ;
बादलों ने कुछ भी न कहा—
बूँद कुछ आँसू की चू पड़ीं।

पुनर्जन्म

कर दो कलिंदजा का काला जल, कूल या तो
कृष्ण का दुकूल, या कि गीत गोप गन की।
हो जो कहीं जाऊँ राधिका की मृदु मुसकान,
कान्ह की कटाक्ष, हरियाली मधुबन की।
चुंबन बना दो राधाकृष्ण ही का या तो फिर
बन जाऊँ अभिलाष गोपियों के मन की!
एक भी न इनमें बनूँ मैं जो विरंचि जू,
तो मुझको बना दो बस धूल वृन्दावन की।

[कादम्बरी]

—⋄⋄—

स्वदेशी

(१)

ईश्वर लगादे मुझको ऐसी लगन स्वदेशी ।
तन मन मेरा स्वदेशी हो मेरा धन स्वदेशी ॥

(२)

सूचित स्वदेशी मेरे मन वचन कर्म से हो ।
भावे मुझे सदा ही सादी चलन स्वदेशी ॥

(३)

देशोपवन के पौदों से निकलें फूल फल वह ।
जो इसको बस बना दें सच्चा चमन स्वदेशी ॥

(४)

हो धर्म भी यहीं का, हों कर्म भी यहीं के ।
हम देश को उबारें अब पक्के बन स्वदेशी ॥

(५)

मत भंग भावे मुझको, गाँजा मुझे गरल हो ।
यदि कुछ भी होवे तो बस होवे व्यसन स्वदेशी ॥

(६)

चित मेरा मत चले कभी चिलमो-चरस के खातिर ।
हो दिल दहन में बस इक केवल जलन स्वदेशी ॥

प्रोफ़ेसर

श्रीरामाज्ञाद्विवेदी 'समीर'-कृत कुछ हिंदी ग्रंथ

१—त्रिकलिका (१९७५)

२—सोने की गाड़ी (नाटक)

३—दूज का चाँद (कवि-सम्राट् रवीन्द्र बाबू के बँगला 'शिशु' तथा Crescent Moon का अनुवाद)

सम्पादित

१—धाराधरधावन (स्व० कविवर पूर्ण-कृत मेघदूत का अनुवाद)

२—सोनारानी (कविवर प्रो० लाला भगवानदीन 'दीन'-लिखित सुन्दर सामाजिक नाटक)

अँग्रेज़ी

1. **Songs from Surdas**
2. **Songs from Mirabai**

} (1922) अनुवाद।

3. **From Dawn to Dusk** (1924) लेखक की मौलिक कविताएँ।

देखिए "सौरभ" के विषय में

आनरेबुल पं० श्यामविहारी मिश्र, एम० ए० (आनर्ज़) क्या कहते हैं:—

पं० श्रीरामाज्ञा जी द्विवेदी, एम. ए., हिन्दी के एक उत्साही नवयुवक प्रेमी हैं। आप समय-समय पर छोटी छोटी कविताएँ अनेकानेक सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया करते हैं। उन्हीं पद्यों को एकत्रित कर तथा कुछ नई कविताओं को सन्निविष्ट करके आपने "सौरभ" नामक यह पद्यात्मक ग्रन्थ हिन्दी संसार के सामने उपस्थित किया है। इसके 'पराग' और "पँखुरियाँ" ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली के दो भाग हैं।

हमने इसके कतिपय छन्द देखे और उन्हें पसन्द किया है। यदि द्विवेदी जी इसी उत्साह के साथ हिन्दी-सेवा में लगे रहेंगे तो आशा है कि समय पाकर वे इसकी श्लाघ्य सेवा करने में समर्थ होंगे। इस छोटे से ग्रन्थ में यदि कहीं-कहीं यतिभंग या छन्दोभंग के उदाहरण मिल जायँ अथवा पिंगल के कुछ अन्य नियमों का पूरा पालन न पाया जाय तो कविता की स्वच्छन्दता की ओर ध्यान देते हुए विज्ञ पाठकों को नाक-भौं न सिकोड़ना चाहिए। इसमें यत्र-तत्र छाया-वाद की छटा भी पाई जायगी। ग्रन्थ देखने ही योग्य है।

—"मिश्र-बन्धु"

ज्येष्ठ शुक्ल ६,
सम्वत १९८४.

"सौरभ" पर एक प्रसिद्ध सम्मति

लब्ध प्रतिष्ठ साहित्य सेवी एवं काव्य-मर्मज्ञ राय-बहादुर साहित्याचार्य जगन्नाथप्रसाद "भानुकवि" लिखते हैं :—

आपने इस पुस्तक का नाम सौरभ बड़ा ही उपयुक्त रक्खा। यथार्थ में इसका एक एक पराग सुगन्धमय है। कवितायें परम ललित भाव-पूर्ण और प्रसादगुण से पूरित हैं। जो लोग कहते हैं कि इन दिनों कोई अच्छी कविता नहीं निकलती, इसे पढ़कर उन्हें अपना मत परिवर्तन करना पड़ेगा। इसका सौरभ उनके चित्त को प्रफुल्लित न कर दे, यह बात हो ही नहीं सकती।

ईश्वर करे आपकी लेखनी से भविष्य में और अधिक ऊँचे दरजे की कवितायें निकलें और आप हिन्दी जगत में अमर हो जांय।

काव्य के कुछ दर्शनीय अनूठे संग्रह !

सुन्दर रेशमी जिल्द } **निर्माल्य** { मूल्य एक रुपया

युग-परिवर्त्तनकारी काव्य-संग्रह

रचयिता—पं० मोहनलालमहतो गयावाल 'वियोगी'

कुछ सर्वमान्य सम्मतियाँ—

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की मुखपत्रिका 'सम्मेलन-पत्रिका' लिखती है—पुस्तक अत्यन्त उत्तम और हिन्दी-कविता-क्षेत्र की एक नई वस्तु है। कवि सहृदय हैं। आपकी कविता अति उच्च श्रेणी की होती है। 'निर्माल्य' की-सी कवितायें **हिन्दी-जगत् में युग-परिवर्त्तन** करने में सहायक हो सकती हैं। हमें आशा है, 'निर्माल्य' की गिनती उन पुस्तकों में होगी, जिन पर खड़ीबोली कुछ अभिमान कर सकती है।

प्रयाग की सुप्रसिद्ध मासिकपत्रिका 'मनोरमा' लिखती है—नवीन युग के कवियों में श्रीमोहनलाल महतो का एक खास स्थान है। आपकी प्रतिभा वास्तव में प्रखर और उच्च है। हमने इस पुस्तक को आदि से अन्त तक पढ़ा। **प्रत्येक छन्द दार्शनिक भावों से भरा** हुआ है। पुस्तक **बहुत सुन्दर छपी** हुई है। हम हिन्दी-वालों से सिफारिश करते हैं कि वे इस नवीन काव्यग्रन्थ को अवश्य देखें।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति 'बिहार के गाँधी' बाबू राजेन्द्रप्रसादजी, एम. ए., एम. एल. लिखते हैं—मैं 'निर्माल्य' को प्राय: आद्योपान्त पढ़ गया, और कुछ अंशों को तो एक बार से अधिक। हिन्दी-कविता में एक बड़ा परिवर्त्तन होता दीख रहा है, और आपका 'निर्माल्य' भी उस परिवर्त्तन में सहायता पहुँचा रहा है। भाव और भाषा में सामंजस्य है। अनेक स्थानों पर भाव और भाषा दोनों का ही बड़ा उत्कर्ष है। आशा है, आपके द्वारा मातृभाषा के पुनीत चरणों पर ऐसे ही **अलौकिक 'निर्माल्य'** चढ़ते रहेंगे।

पद्य-प्रसून

[काव्य संग्रह]

रचयिता—**पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय**

"सम्मेलन-पत्रिका" लिखती है—कविवर उपाध्यायजी के सरस पद्यों का यह एक सुन्दर संग्रह है। हिन्दी-संसार को उपाध्यायजी की रचना पर अभिमान है। वास्तव में वह एक युग के कवि हैं। पावन प्रसङ्ग, जीवन-स्रोत, सुशिक्षा-सोपान, जीवनीधारा, जातीयता-ज्योति, विविध विषय आदि विषयों में कवितायें विभक्त की गई हैं। अन्त में 'बालविलास' नाम के विभाग में बाल-सम्बन्धी कविताओं का बड़ा सुन्दर संग्रह किया गया है।

पृष्ठ-संख्या लगभग ३००, कागज मोटा, छपाई सुन्दर, जिल्द पक्की, मूल्य १॥)

नवीन बीन

[संग्रह-काव्य]

रचयिता—**प्रोफेसर लाला भगवानदीन**

"सम्मेलन-पत्रिका" लिखती है—यह ग्रंथ प्रोफेसर लाला भगवानदीन जी की ४२ सरस कविताओं का संग्रह है। २० कवितायें सचित्र हैं। दीनजी हिन्दी के एक सुप्रसिद्ध समालोचक, व्रजभाषा के मर्मज्ञ तथा सहृदय कवि हैं। इस संग्रह में आपकी वीर-रस, प्रकृति-वर्णन, ऋतु-वर्णन तथा देश-भक्तिपूर्ण अनेक कवितायें बहुत सुन्दर हैं। आपकी लिखी व्रजभाषा की कवितायें भी इसमें संग्रहीत हैं। दीनजी की स्फुट कविताओं का संग्रह अभी तक नहीं निकला था। प्रकाशक ने आपकी कविताओं का संग्रह निकाल करके एक अभाव की पूर्ति की है।

कागज और छपाई-सफाई सुन्दर, पक्की जिल्द, आर्ट-पेपर पर छपे २० चित्र, मू० २)

विद्यापति की पदावली

सम्पादक—**श्रीरामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी 'बालक'-सम्पादक**

मासिकपत्रों की महारानी 'माधुरी' एक लम्बी समालोचना में लिखती है—पुस्तक में मैथिल कोकिल विद्यापति के २६५ पद्यों का संग्रह है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि शृङ्गारी कवियों में उनका उच्च स्थान है। तीन-तीन प्रांतों में उनकी कविता का आदर

है। उनकी भाषा में जो माधुर्य है, वह अलंकृत काल के अनेक कवियों में, अस्वाभाविक रूप से प्रयत्न करने पर भी, नहीं आया। उनकी कविता में स्वाभाविकता का सर्वत्र प्रमाण मिलता है। हिन्दी के शृङ्गारी कवियों में 'हृदय-हीनता' का जो दोषारोपण किया जाता है, उससे वह सर्वथा विमुक्त हैं। प्रस्तुत भारतीय कला के सुप्रसिद्ध चित्रकार धुरंधर महाशय के ९ चित्रों ने इस पुस्तक की शोभा को कई-गुना बढ़ाकर काव्य और चित्र-कला का परस्पर गहन सम्बन्ध पूर्ण रीति से प्रकट कर दिया है। यह संस्करण बहुत ही अच्छा निकला। पाद-टिप्पणियाँ बहुत उपयोगी हैं। इस संस्करण की उपयोगिता के विषय में हम केवल यही कह सकते हैं कि हमारे एक मित्र, जो हिन्दी-साहित्य से सर्वथा विरक्त थे, इन पाद-टिप्पणियों की सहायता से विद्यापति का अध्ययन करके ही, हिन्दी-साहित्य के उपासक बन गये हैं।

दागे 'जिगर' तथा कविरत्न 'मीर'

लेखक—**श्रीरामनाथ लाल 'सुमन'**

'सुमनजी' की इन दोनों समालोचनात्मक पुस्तकों की प्रशंसा हिन्दी के प्रायः सभी पत्र-पत्रिकाओं ने दिल खोलकर की है। 'मीर' और 'जिगर' के निहायत लाजवाब कलामों पर 'सुमनजी' की कवित्वपूर्ण आलोचना ने कमाल कर दिया है। पन्ने-पन्ने में आकर्षण है। छपाई-सफाई और शुद्धता का तो उत्कृष्ट नमूना है। कुछ सम्मतियाँ ही देख लीजिये—

कानपुर का प्रतापी साप्ताहिक 'प्रताप' लिखता है—

'जिगर' की भावपूर्व रचनाओं पर 'सुमनजी' की टिप्पणियाँ बहुत सुन्दर हैं। उनसे उर्दू का स्वल्प ज्ञान रखने वालों को भी 'जिगर' की रचनायें समझने में बड़ी मदद मिलेगी। 'सुमनजी' स्वयं कवि हैं। दर्द-भरे दिल की बात समझकर एक वैसा ही हृदय उस पर वास्तविक प्रकाश डाल सकता है। हमें आशा है, यह पुस्तक हिन्दी के काव्य-साहित्य में यथेष्ट आदर पावेगी।

छपाई-सफाई दर्शनीय। पक्की जिल्द। मूल्य केवल १।)

कलकत्ते का परम प्रसिद्ध पत्र 'मतवाला' लिखता है—

'कविरत्न मीर'—मजबूत जिल्द से ढँकी हुई, छपाई-सफाई और कागज प्रशंसनीय। 'दागे जिगर' की अपेक्षा 'कविरत्न मीर' की समालोचना में 'सुमनजी' अधिक सफल हुए हैं।... अर्थ सुमनजी ने बड़ा ही साफ और मर्मस्पर्शी किया है। पढ़कर एकाएक हृदय काँप उठता है। इस पुस्तक को पढ़कर 'सुमन' जी की कृपा से 'मीर' की कविता का जो आनन्द मिला, उसकी याद मेरी स्मृति की अन्तिम सामग्री होगी। ऐसी पुस्तकों के प्रकाशक को हजारों धन्यवाद।

ऐसी सर्व-प्रशंसित सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का मूल्य केवल १॥)

विपंची

रचयिता—**साहित्य-भूषण श्रीरामनाथलाल 'सुमन'**

इसमें 'सुमनजी' की चुनी-चुनाई उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह

है । 'प्रताप' का कहना है कि 'केवल इसकी पहली कविता पर ही एक ही चवन्नी की कौन कहे, कितनी ही चवन्नियाँ-चाँदी की नहीं, सोने की—निछावर कर दी जा सकती हैं।' छपाई बिल्कुल अनूठी । सादगी में खूबसूरती ! मूल्य ।)

कली

यह विहार-प्रान्त के तीन प्रतिभाशाली नवयुवक कवियों की चमत्कारपूर्ण कविताओं का संग्रह है । इसमें ऐसी-ऐसी चुभीली रचनायें हैं कि पढ़कर आप बरबस कलेजा पकड़ लेंगे । कविताओं में भावुकता और सहृदयता तथा रस-मर्मज्ञता की गहरी छाप है । छपाई-सफाई दर्शनीय । आप जेब में ही रखे फिरेंगे । मूल्य ।)

मधु-संचय

मधुकर—पं० शान्तिप्रिय द्विवेदी

यह पुस्तक नवयुवकों के हृदय को मुग्ध करनेवाली है । छपाई-सफाई बिल्कुल अप-टु-डेट अँगरेजी फैशन की है । इसमें छवि, प्रेम और विरह पर चुनिन्दा रसीली कविताओं का संकलन किया गया है, जिससे यह एक तरह का अतीव मनोरंजक पद्यात्मक उपन्यास हो गया है । मूल्य =)